SPS
891.2 G 87 B

6346





भारती भूषण

بھارتی بھوشن

श्री गिरिधर दास कविराज कृत

जिसमें

सम्पूर्ण अलङ्कार के लक्षण उदाहरण सहित अति

सरलता पूर्व्वक वर्णित हैं

पहिलीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

अक्टूबर सन् १८८० ई०

6346

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अक्टूबर सन् १८८० ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वे इस फ़िहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिस को व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करले॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	६ भीष्मपर्व	बालकाण्ड	अनेकार्थ
महाभारत	७ द्रोणपर्व	अयोध्याकाण्ड	छन्दोर्णवपिंगल
१ हिस्सा में आदिपर्व,	८ कर्णपर्व	३ आरण्यकाण्ड	कविकुलकल्पतरु
सभापर्व, वनपर्व,	९ शल्यपर्व गदा	४ किष्किन्धाकांड	रसराज
२ हिस्सा में विराटपर्व	सौप्तिकपर्व ऐषीक	५ सुन्दरकाण्ड	सतसई सटीक बिहारी
उद्योगपर्व भीष्मपर्व	विक व विशोकपर्व	६ लंकाकाण्ड	सतसई
द्रोणपर्व	स्त्रीपर्व	७ उत्तरकाण्ड	सभाविलास
३ हिस्सा में कर्णपर्व	१० शान्तिपर्व राज	रामायण शब्दार्थकोश	तुलसी शब्दार्थप्र-
शल्यपर्व, गदापर्व,	धर्म व आपद्धर्म	रामायण की इतिहास	भजनावली
सौप्तिकपर्व, ऐषीक	व मोक्षधर्म व दान	रामायण मानसदीपि-	प्रेमरत्न
पर्व, विशोकपर्व, स्त्री	धर्म	रामायण गीतावली	युगलविलास
पर्व, शान्तिपर्व राजध-	११ अश्वमेध आश्र-	रामायण गीतावलीस	चित्र चन्द्रिका
र्म, मोक्षधर्म	म वासिक मुशलप	विनयपत्रिका बाबू बै-	बारहमासा बलदेव
४ हिस्सा में शान्तिपर्व,	र्व महाप्रस्थान स्व	विनयपत्रिका बाबू शि-	मनोहर लहरी
दानधर्म, अश्वमेध,	र्गारोहण	वेदान्त	गंगालहरी
आश्रमवासिकपर्व,	१२ हरिवंशपर्व	योगवासिष्ठ	ज्ञान विनोद
मुशलपर्व, महाप्र-	रामायण रामविलास	प्रबोधचंद्रोदयनाटक	राग
स्थान, स्वर्गारोहण	रामायण तुलसीकृ-	काव्य	रागप्रकाश
पर्व हरिवंशपर्व	रामायण मयमानस	सूरसागर	लावनी
महाभारत पर्व अलै-	दीपिका कोश आदि	कृष्णसागर	शृंगार बत्तीसी
हदा भी हैं	तथा मयतसवीर	विश्रामसागर	क़िस्सह वग़ैरह
१ आदिपर्व	तथा जिल्दबन्धी	प्रेमसागर	नानार्थनो संग्रहावली
२ सभापर्व	तथा मोटे अक्षरों की	व्रजविलास	ब्रह्मसार
३ वनपर्व	मयतसवीर	व्रजविलास छोटा	शिवसिंह सरोज
४ विराटपर्व	तथा मय क्षेपक	कृष्णप्रिया	भक्तमाल
५ उद्योगपर्व	रामायण आठों कांड	विजयमुक्तावली	रामाभिषेक नाटक

श्रीगणेशाय नमः

अथ भारतीभूषण

लिख्यते

दोहा

॥ श्रीवल्लभ आचार्य्य के भजत भजत सब पाप ॥ श्रीवल्लभ करुणा करत हरत सकल संताप १ विधि भव तरनी हम न ही जम गरूर करु नाहिं ॥ विधि भव तरनी नमत नित हरि पद मम उर माहिं २ मोहन मन मानी सदा बानी को करि ध्यान ॥ अलंकार बरनन करत गिरिधरदास सुजान ३ सुंदर बरनन गन रचित भारति भूषन गेहु ॥ पढ़हु गुनहु सीखहु सुनहु सत कवि सहित सनेहु ४ अथोपमा लक्षण ॥ सो उपमा जहं बरनिये उपमेय रु उपमान ॥ समताई शोभित सदा इमि कवि कहहिं सुजान ५ उदाहरण यथा ॥ आनन पंचानन तिलक पंचानन कटि सोह। खरी रमा सी राधिका भरी मोद संदोह ६ उपमानादि के लक्षण ॥ जाकी समता दीजिए तिहि कहिए उपमान ७ जाको सम करि बरनिए सो उपमेय न आन उपमेय रु उपमान गत जो कछु धरम लखाय ॥ सो सा[धारण धर्म] के जग सु इमि बरनहिं कबिराय ८ समता बोधक शब्द नति सी विन कनाम ॥ बरने गिरिधर दास इमि ल[क्षण] लिसी भणलिसीयें

कंबु कमल अरु बिंब फल सुक सुवरन की सीप ॥ इनहिं
आदि उपमान हैं समुझहु कबि कुल दीप ॥ २० ॥ कंठ चंपौ-
रियै पलका वली अधर नासिका योन ॥ इनहिं आदि उ-
पमेय हैं वर नहिं वर बुधि भौन ॥ २१ ॥ सुंदरता सुकुमारता
स्यामलता सुललाम ॥ ए साधारन धर्म हैं मनहरता रस
धाम ॥ २२ ॥ लौं सो से सी सीं सरिस सम समान इव तूल ॥
ऐसौ ऐसे ए सकल उपमा वाचक मूल ॥ २३ ॥ जिमि ति-
मि जैसोइ तैसोई यथा तथा ज्यौं त्यौंहिं ॥ एऊ उपमा वा-
चक हि दोय मिले ते होहिं ॥ २४ ॥ अथ पूर्णोपमालं० ॥ उप
मान रु उपमेय जहँ उपमा वाचक होइ ॥ सह साधारन ध-
र्म के पूरन उपमा सोइ ॥ २५ ॥ उदाहरन ॥ मुख सुख करनि
सिका सरिस सफरी से चल नैन ॥ छीन लंक हरि लंक सी
बाढी ऐना ऐन ॥ २६ ॥ अथ लुप्तोपमा ॥ उपमानादिक
जे कहे तिन चारिहूं प्रकारि ॥ इक बिन है बिन तीन बिन
लुप्तोपमा विचारि ॥ २७ ॥ वाचक लुप्ता प्रथम बिन उपमा
वाचक होइ ॥ द्वितिय धर्म लुप्ता कहिय धर्म रहित है सो-
इ ॥ २८ ॥ तीजो है वाचक धरम लुप्ता सुकवि सुजान ॥ बिन
वाचक उपमेय के लुप्ता चौथी जान ॥ २९ ॥ पंचईं है उपमान
बिन बिन वाचक उपमान ॥ छठीं धरम उपमान बिन सत-
... मान ॥ ३० ॥ उपमान रु वाचक धरम लुप्ता अठईं जा-
... भांति लुप्तोपमा कबिजन कहहिं बखान ॥ ३१
... दाहरण ॥ मुख पूरन ससि सोहनो अमल
... कनक बेलि कल कामिनी मारवन ।

छूटा भी है
१ आदि पर्व
२ सभा पर्व
३ बन पर्व
४ विराट पर्व
५ उद्योग पर्व

मधुरे बैन॥२२॥ धर्मलुप्तोदाहरण॥ बिज्जुलतासी नागरीस जल जलद से श्याम॥ खरे कुंज मैं छविभरे दोऊ अति अभिराम॥२३॥ वाचक धर्म लुप्तोदाहरण॥ बैन सुधा दृग मैनसर सैन सैन के अैन॥बदन रैन पति लखहु हरि रैन चैन वर दैन॥२४॥ वाचकोपमेयलुप्तोदाहरण॥ अटा उदय होत भयो छविधर पूरन चंद॥ हौं बलि चलि अवलोकिये मनमथ करन अनंद॥२५॥ उपमान लुप्तोदाहरण॥ सुंदर कंठ कपोत सो के हरि सी कटि खीन॥ जे हरि भ्रम कांचे खरी हैं हरि कुंज गलीन॥२६॥ वाचकोपमान लुप्तोपमा॥ भवन दीप कामिनि दिपति सरप सांस शुर लेति॥ कौन हेतु हरि मौन वह बूझेहु उत्तरु देति॥२७॥ धर्मोपमान लुप्तोदाहरण॥ घन समरन गरजत फिरै करै कालसी मारि॥ सागरसी गंभीरता समर धीर त्रिपुरारि॥२८॥ उपमान वाचक धर्म लुप्तोदाहरण॥ मृग नैनी गज गामिनी पिक बैनी सुकुमारि॥ के हरि कटि वारी खरी नारी लखो मुरारि॥२९॥ अथ मालोपमा॥ जहँ एकहि उपमेय के बरने बहु उपमान॥ ताहि कहहिं मालोपमा कवि सुजान मतिमान॥३०॥ उदाहरण॥ मृगसे मनमथ बान से पीन मीन से स्वच्छ॥ कंजन से खंजनन से मन रंजन तो अच्छ॥३१॥ अथ रसनोपमा लक्षण॥ कथित प्रथम उपमेय जहँ होत जात उपमान॥ ताहि कहहिं रसनोपमा जे जग सुकवि प्रधान॥३२॥ उदाहरन॥ मति सी नति नति सी विनति विनती सी रति चारु॥ रति सी गति गति सी भगति तो मैं

पवन कुमार ॥३३॥ अनन्वय लक्षण ॥ एकाहि में उपमे-
यता उपमानता जु होइ ॥ दूजे सों समता नहीं यहै अन
न्वै सोइ ॥३४॥ उदाहरण ॥ तुव कीरती सी स्वच्छ न तुव
कीरति है श्याम ॥ सुर सरिता सी सुरसरी शोभा भरी सुद-
म ॥३५॥ उपमेयोपमा लक्षण ॥ है है ही जहं परसपर उपमे-
य रु उपमान ॥ सो है उपमेयोपमा तीजे सो समतान ॥३६॥
उदाहरण ॥ अमल कमल से नैन हैं कमल नैन से स्वच्छ
॥ रुचिर काम से श्याम हैं हरि सम काम प्रतच्छ ॥३७॥ प्र-
थम प्रतीप लक्षण ॥ उपमेय हि उपमान जब कीजे गिरिध-
रदास ॥ ताको पांच प्रतीप में प्रथम जानिये खास ॥३८॥
उदाहरण ॥ तो ऐसी तिय काम की तो मुख सो राकेस ॥
नव पल्लव तव अधर से कंबु कंठ सम वेस ॥३९॥ द्वितीय
प्रतीप लक्षण ॥ जहं प्रतीप उपमान को गर्ब हरे उपमेय
॥ दूजो कहहिं प्रतीप तेहि जिनकी बुद्धि अमेय ॥४०॥ उ-
दाहरण ॥ कहा करति निज रूप को गरब गहे अविवेक ॥
रमा उमा सचि सारदा तो सी तीय अनेक ॥४१॥ तृतीय प्र-
ल० ॥ अन आदर उपमेय सों जब पावे उपमान ॥ तीजो
कहहिं प्रतीप तेहि कवि अवनीप सुजान ॥४२॥ उदा-
हरण ॥ नीच पने को क्यों करत तूं उर बीच गुमान ॥ अंबु
ज तो से अधिक जग है री देखी पहिचान ॥४३॥ चतुर्थ प्र
ल० ॥ समता लायक होय नहिं लखि जाहिर उपमान ॥ गि-
रिधरदास प्रतीप सो है चतुर्थ मतिमान ॥४४॥ उदाहरण
तो मुख ऐसो पंकसुत अरु ससंक यह बात ॥ कर नहिं

वृथा असंक कवि बुद्धि रंक विख्यात ॥४५॥ पंचमप्रतीप
लक्षण ॥ व्यर्थ होइ उपमान जब वर उपमेय समीप ॥ गि-
रिधरदास बखानि यै पंचम ताहि प्रतीप ॥४६॥ उदाहर-
ण ॥ देखि रूपवत कामिनी कहा उरवशी नारि ॥ कहा मैन
का मैन तिय कमला शैलकुमारि ॥४७॥ द्विविध रूपक ।-
लक्षण ॥ विषई विषयहि बरनियै करि अभेद तद्रूप ॥
अधिक न्यून सम करि सोई षट विधि रूपक रूप ॥४८॥ आधि-
कोक्ति अभेद रूपक उ० ॥ घन गज चढ़ि आकाश मग चले
इंद्र अरि जोइ ॥ सुधा स्रवत शशि छत्र सिर मोतिन जगम-
ग होइ ॥४९॥ न्यूनोक्ति रूपक उदा० ॥ कुसुम धनुष बिनु कु-
सुम धनु देखे कुंज गलीन ॥ चली जात जग अमल यह
कमला कमल विहीन ॥५०॥ समोक्ति अभेद रूपक उदा०
तुअ आनन ससि दुखहरन सुधा धरन छबि खानि ॥
रजनीरंजन रसिक प्रिय तमहर आनंद दानि ॥५१॥ आ-
धिकोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥ जस धुज वा धुज तें अधिक
तीन लोक फहरात ॥ धर्म मित्र वह मित्र सों मरत जियत
संग जात ॥५२॥ न्यूनोक्ति तद्रूप रूपक उदा० ॥ अपर धने-
श जनेश यह नहिं पुष्पक आसीन ॥ द्वितिय गणेश सुवेश
शुचि सोहत सुंड विहीन ॥५३॥ समोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥
यह पालत संसार कों पालत पर को पच्छ ॥ अपर मनो-
हर रूप धर अंबुज अच्छ प्रतच्छ ॥५४॥ परिणाम ल० ॥
बरननीय उपमान ह्वै जबै करै कछु काम ॥ गिरिधरदास
बखानि यै तासु नाम परिनाम ॥५५॥ उदाहरण० ॥ पद

पंकज तें चलत बर कर पंकज लै कुंज ॥ मुख पंकज तें क-
हत हरि बसन रचन मुद मंजु ॥ श्लेष लक्षण ॥ एकहि
बहु बहु विधि लसैं इकहि वरनि बहु रीति ॥ श्लेषा लंकार
उभय कवि बरनहिं करि प्रीति ॥ ५७ ॥ प्रथम श्लेष उ० ॥
तियन काम आनंद घन हित नंद सुवन नव संग ॥ सखी
बंस अन सुनि लहरि मोहन मधिबसे रंग ॥ ५८ ॥ द्वितीय श-
्लेष उदा० ॥ तेज तरनि मुद दानि शशि शत्रुन काल सुना-
म ॥ ब्रज नारिन कों काम से अहो सदा घन श्याम ॥ ५९ ॥
सुमिरन भ्रम संदेह ल० ॥ सुमिरन भ्रम संदेह ए अलंका-
र हैं तीन ॥ लक्षण लक्षित नाम मैं बरनहिं सुकवि प्र-
वीन ॥ ६० ॥ सुमिरन उ० ॥ सुनि कोकिल धुनि बचन की
आवति है सुधि मोहि ॥ लखि शशि मुख की होति सुधि
तन सुधि घन कों जोहि ॥ ६१ ॥ भ्रम उदाहरण ॥ जानि श्या-
म घन घन तुम्हें नाचि उठे बन मोर ॥ हेम सलाका मानि
तोहि चोर फिरैं सब ओर ॥ ६२ ॥ संदेह उदाहरण ॥ रमा कि
राधा कै गिरा गिरिजा कै रति जानि ॥ श्याम काम धौं क-
लपतरु नारायण मुद दानि ॥ ६३ ॥ शुद्धा पन्हुति लक्षण ॥
धर्म दुरावे औरही करि आरोप सुजान ॥ शुद्धापन्हुति क-
हहि तेहि अलंकार मति मान ॥ ६४ ॥ उदा० ॥ पहिरे श्या-
मन पीत पट घन मैं विज्जु बिलास ॥ सिर सारी नहिं ता-
स की इंदु कला परकास ॥ ६५ ॥ हेत्व पन्हुति ल० ॥ सोइ
शुद्धा पन्हुति विषे जक्ति जुक्ति जुत यत्र ॥ गिरिधर दास
बखानि ए हेतु अपन्हुति तत्र ॥ ६६ ॥ उदा० ॥ तिपन निसा

घन बन चले हेम बेलि नहिं जाय॥ छटकि जलद तें जल-
द बहु दामिनि जात लखाय॥६७॥ पर्यस्तापन्हुति ल०॥
ञ्योर विषें गुन ञ्योर को जब कीजे ञ्यारोप॥ तव पर्यस्ता प-
न्हुती इमि कवि कहहिं सचोप॥६८॥ उदा०॥ नहीं एक सु-
रपति ञ्यहें सुरपति नंद कुमार॥ रतना कर सागर नहीं म-
धुरा नगर बजार॥६९॥ हेतु पर्यस्ता पन्हुति लक्षण॥ पर्य-
स्तापन्हुति विषें हेतु सहित जो कोइ॥ धर्म छपावें हेतु।
गुन वही नाम तव होइ॥७०॥ उदाहरण॥ तम हर रवि नहिं
हरि भजन तमी होइ रवि लोक॥ कहुं तम रहे न हरि भजे।
इमि कहहिं सति ञ्योक॥७१॥ भ्रांता पन्हुति ल०॥ भ्रांति
ञ्योर की ञ्योर जब करे बचन सों नास॥ भ्रांता पन्हुति।
कहहिं तेहि कविजन गिरि धर दास॥७२॥ उदाहरण॥
जीवन दीनो श्याम घन सजनी रजनी ञ्याइ॥ कों सरित
बिन बरसात के नहिं नहिं गोकुल राइ॥७३॥ छेका पन्हुति
ल०॥ संकाना से ञ्योर की सांची बात दुराइ॥ छेका पन्हु-
ति कहत हैं ताहि कबिन के राइ॥७४॥ उदा०॥ ञ्यंचि चीं-
र तन सकल किय हरे सिंगार समच्छ॥ कुंजन में कों श्या-
म सखि नहिं करील को वृच्छ॥७५॥ कैतवा पन्हुति ल०
ञ्योरहि बरनें ञ्योर ई मिसि करि वर मति मान॥ ताहि कैत-
वा पन्हुती भूषन कहहिं सुजान॥७६॥ उ०॥ कुच मि-
स करि मन मथ मथन त्रिय उर करत निवास॥ पावस
मिस कर वज्र ले इंद्र देत ब्रज त्रास॥७७॥ उत्प्रेक्षा लक्ष-
ण॥ उत्प्रेक्षा विधि तीन हैं इहि विधि कहहिं प्रवीन॥

वस्तु हेतु फल रूप करि जिनकी भनिरस पीन ॥ ७८ ॥ वस्तु हेतु फल भेद वर्णन ॥ वस्तु द्विविध उक्ता सपद अनुक्ता सपद जानि ॥ हेतु सुफल सिद्धा सपद असिद्धा सपद मानि ७९ उक्तास्पद वस्तूत्प्रेक्षोदाहरण ॥ हालाहल निकस्यो महा भरत ज्वाल की जाल ॥ सिंधु मथत मानो कढ़ी बड़वानल की ज्वाल ॥ ८० ॥ अनुक्तास्पद वस्तूत्प्रेक्षोदाहरण ॥ बरषत मानो चंद्रमा किरिन बज्र कन बान ॥ सावन में धावन लगे घनु यम गन अस मान ॥ ८१ ॥ हेतु सिद्धा स्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तुम्म कर रातेलसत मनु गहीहिं डोरा डोर ॥ लोपट छाया परत मनु श्यामल नंद किशोर ॥ ८२ ॥ हेतु असिद्धा स्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तोई छुन समता चहत मानहु तीछन बान ॥ छूरि महीप कमान सों लेहिं मृगन को प्रान ॥ ८३ ॥ फल सिद्धा स्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ मोहि लखि चपला सकुचि पुनि घनमें जाति समाइ ॥ यों गुनि तिय मनु मूंदि मुख मंदिर बैठी आइ ॥ ८४ ॥ फल असिद्धा स्पदोत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तो करि समता हेतु मनु सिंह करत बनवासु ॥ कुच समता हित सहत मनु गिरि हिम घाम बतास ॥ ८५ ॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक ॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक मनहुं मनु जनु आदिक आहिं ॥ जहां नहीं ए जानिए गम्योत्प्रेक्षा नाहिं ॥ ८६ ॥ गम्योत्प्रेक्षोदाहरण ॥ तोरि तीर तरु के सुमन वर सुगंध के भौन ॥ जमुना को पूजन करत वृन्दाबन को पौन ॥ ८७ ॥ रूपकातिशयोक्ति लक्षण ॥ जहं व्यंजक उपमेय को कहि केवल उपमान ॥ रूपकातिशयोक्ति

तिहि वरनहिं बुद्धि निधान ॥८८॥ उदाहरण ॥ ससि में वि-
द्रुम ता विषें कुंदावलि दरसाइ ॥ तापैं सुक सुक पैं धनुष
विवि सर सहित लखाइ ॥८९॥ सापन्हव रूप कातिशयो-
क्ति लक्षण ॥ पर्य्यस्ताप न्हुति सहित यही अलंकृत यत्र ॥
सापन्हव रूपक सहित अति शयोक्ति है तत्र ॥९०॥ उदाहर
ण ॥ तुअ मुख में नि वसत सुधा हे राधे सुकुमारि ॥ ताहि
बखाने चंदमा विन बूझें भ्रम धारि ॥ ९१॥ भेद कातिस-
योक्ति लक्षण ॥ औरै पद भेदक जहां अति शयोक्ति में
होइ ॥ भेद कातिशय उक्ति वर अलंकार है सोइ ॥ ९२॥
उदाहरण ॥ अव लोकनि बोलनि हंसनि डोलनि औरै
और ॥ आवनि मृदु गावनि सबै औरै याके तौर ॥ ९३॥
संवधातिशयोक्ति लक्षण ॥ जहां देत संवध सौं सुकवि
अयोग हि योग ॥ संवधातिशयोक्ति तिहि वरनत पंडित
लोग ॥ ९४॥ उदाहरण ॥ चलत अवध पुर पियत जलनभ
सरिको भरि सुंड ॥ कलस लेत ध्रुव धाम के तुम्हरे गमभ-
सुंड ॥ ९५॥ असंबंधातिशयोक्ति लक्षण ॥ जोगहि करि-
य अजोग जब मति अनुसार प्रकास ॥ असंवंध अति
शय उकुति कहिये गिरिधर दास ॥ ९६॥ उदाहरण ॥ रवि
पावे सनमान क्यों तेज देखि तुअ भूप ॥ पवि सरतें कवि
बुद्धि तें सदा निरादर रूप ॥ ९७॥ अक्रमातिशयोक्ति लक्षण
॥ कारण औ कारज जबै दुहूँ वरनिय संग ॥ अक्रमातिश-
य उक्ति सों भूषन कविता अंग ॥ ९८॥ उदाहरण ॥ उठौं सं-
ग गज कर कमल चक्र चक्र धर हाथ ॥ करतें चक्र सुनक्र

सिर धारें विलख्यो साथ ॥१९९॥ चपलातिशयोक्ति लक्षण
कारन के नाम हि सुने कारज आसु हि होइ ॥ चपला अति
शय उक्ति यह अलंकार है सोइ ॥२००॥ उदाह० ॥ जान क
ह्यो पर देश पिय सुनि सूखी यो बाल ॥ मुंदरी कर पहुंची भई
पहुंची उर की माल ॥२०१॥ अत्यंतातिशयोक्ति ल० ॥ पूर्वा
पर क्रम ना मिलै जाको गिरिधर दास ॥ अत्यंतातिशयो
क्ति तेहि कवि जन करहिं प्रकास ॥२०२॥ उदा० ॥ हनूमान
की पूछ मैं लगन न पाई आगि लंका सिगरी जरि गई गए नि
शाचर भागि ॥२०३॥ तुल्य योगिता ल० ॥ क्रिया और गुन
करि जहां धर्म एकता होइ ॥ वर्ण्यन को कै इतर को तुल्य
योगिता सोइ ॥२०४॥ प्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥
अरुन उदय अवलोकि कै सकुचहिं कुवलै चोर ॥ इंदु उद
य लखि स्वैरिनी वदन वनज चहुं ओर ॥२०५॥ अप्रस्तुत
तुल्य योगिता उदाहरण ॥ लखि तेरी सुकुमारता सीया ज
ग माहिं ॥ कमल गुलाब कठोर से काकों भासत नाहिं ॥
२०६॥ द्वितिय तुल्य योगिता लक्षण ॥ तुल्य वृत्ति हित अ
हित मैं जब वर्निय निरधारि ॥ तुल्य योगिता अपर यह व
नाहिं सुकवि विचारि ॥२०७॥ उदाहरण ॥ गिरिधर दास ज
हांन मैं तुम अप ति चतुर सुजान ॥ सर कीरा करि हरत हौ
नियको अरि को मान ॥२०८॥ तृतीय तुल्य योगिता लक्ष
ण ॥ सम करि एक तहां गुन बहु को एकहि त्याइ ॥ तुल्य
योगिता तीसरी ताहि कहैं कविराइ ॥२०९॥ उदाहरण ॥ जु
म विधि बुध विधु विबुधपति विधुधर बुद्धि निधान ॥ सुमी

भूप सो कल्प तरु गुन निध चतुर सुजान ॥ २२१ ॥ दीपक ल०
जहं अवर्ण्य अरु वर्ण्य को धर्म एक गुनि लेहु ॥ अलंकार दीपक
सो नाम तासु कहि देहु ॥ २२२ ॥ उदा० ॥ सोहत भूपति दान सों फ-
ल फूलन आराम ॥ ऊंचे तन सों द्विरद वर गति सों अश्व सु-
दाम ॥ २२३ ॥ आवृत्त दीपक ल० ॥ आवृत्त दीपक तीन विधि
पद आवृत्त इक जानि ॥ अर्था वृत्ति पद अर्थ की आवृत्ति
ह्वमि पहिचानि ॥ २२३ ॥ पद आवृत्ति दीपक उदा० ॥ नंद सु-
वन व्यारू करत चाढी प्रीति अथोर ॥ परसति सुंदरी सरस
तिय परसत दृग दृग कोर ॥ २२४ ॥ अर्था वृत्ति दीपक उदा०
॥ सोहहिं संगर मत्त गज धावहिं हय समुदाइ ॥ नदहिं रंग
महिं वहु नदी नाचहिं नर हरषाइ २२५ ॥ पदार्था वृत्ति
दीपक उदा० ॥ गरजत हैं रन राम जू गरजत है दस सीस ।
आवत रिसि भरि रजनि चर दुहुं दिशि धावत कीस ॥
२२६ ॥ प्रति वस्तू पमा लक्षण ॥ होहिं वस्तु प्रति सम जवे
उपमे यरु उपमान ॥ जुदे जुदे पद करि कहौ प्रति वस्तू पम
जान ॥ २२७ ॥ उदाहरन ॥ साधु संग पायहु नहीं खलको
खल पन जाय ॥ सुधा पिआ एहु अहि नहीं तजै गरल
दुखदाय ॥ २२८ ॥ दृष्टान्त ल० ॥ वर्ण्य अवर्ण्य दुहून को
भिन्न धर्म दरसाइ ॥ जहां विंब प्रति विंब सो सो दृष्टान्त क-
हाइ ॥ २२९ ॥ उदाहरण ॥ रूपवती तुमहीं अहो रती पमाव-
ती जानि ॥ नृप तुमहीं ज्ञानी अहो दानी सुरतरु मानि ॥
२२३० ॥ निदर्शना लक्षण ॥ तीन प्रकार निदर्शना कवि व-
रनहिं स विवेक ॥ सदृश दोउ वाक्यार्थ को एकारोपन ।

न एक॥२२१॥ उदाहरन ॥ जो दाता को सरल चित नहीं कु-
टिलता भास ॥ पूरन विधु अकलं कता जानिय गिरिधर-
दास ॥२२२॥ द्वितिय निदर्शना ल० ॥ उपमानौ उपमेय को ध-
र्म धरै जव ल्याइ ॥ पलटे हूं सुनि दर्शना द्वितिय कहहिं क-
विराइ ॥२२३॥ उदाहरण ॥ लई चपलई मीन की तो दृग
नारि निहारु ॥ नृपतो पानि उदारता लीनी सुरतरु चारु
॥२२४॥ तृतीय निदर्शना ल० ॥ जहं सदर्थ असदर्थ को
बोध क्रिया करि होइ ॥ तीजी तहां निदर्शना बरनहिं क-
बि सब कोइ ॥२२५॥ सदर्थ उदाहरण ॥ गुरु पादोदक सि-
र धरिय सदा जतावत एहु ॥ सिर धारत हैं गंग को महादे-
व करि नेहु ॥२२६॥ असदर्थ उदाहरन ॥ निडर पनो करि
बड़न को नास जनावत जाति ॥ करत मसाल मुकाबिले
बाती तुरत बुझाति ॥२२७॥ व्यतिरेक ल० ॥ वरनिय वरण्य
अवरण्य मैं जहं विशेष कविराइ ॥ अधिक न्यून सम भेद
करि सो व्यतिरेक कहाइ ॥२२८॥ अधिक उदाहरन० ॥ भूप
कल्पतरु से अहो वैभव बुद्धि विशेषि ॥ तियपल्लव से तो-
अधर अधिक अमृत रस पेखि ॥२२९॥ न्यून उदाहरन०
हरि से हरि जन जानु पै हरि घर घर बिश्राम ॥ कुटिल सर्प
से पै सरप डस ताहि करत तमाम ॥२३०॥ सम उदाहरन०
जो निज घेरे मैं परत चूर करत दलि ताहि ॥ पथ्थ संग पै
गहत नहि खल खल वृंद सदाहि ॥२३१॥ सहोक्ति ल० ॥
जहं मन रंजन वरनियै एक संग वहु बात ॥ सो सहोक्ति
आभरन है ग्रंथन मैं विख्यात ॥२३२॥ उदाहरन० ॥ साईं

सहोक्ति

चतुराई तिय तरुनाई के संग॥ मन मोहन सों मन मि-
ल्यो दून नैनन के संग ॥ २४३॥ विनोक्तिलक्षण॥ है विध
कहहिं विनोक्ति यों कछु कोउ दुहि के ऐन॥ प्रस्तुत कछु
बिन न्यून सह कछु बिन सोभा दैन॥ २४४॥ प्रथम वि-
नोक्ति उदाहरण॥ कवि बिन नहिं सोहै सभा निसि बिन
सुधानिवास॥ कुसुम न गिरिधरदास बिन गिरिधर गि-
रिधरदास॥ २४५॥ द्वितीय विनोक्ति उ०॥ धन्य धन्य तो
को धनी बिना गरब सरसात॥ रामराज तव सुयश नत
स कर सुनि हरसात॥ २४६॥ समासोक्तिलक्षण०॥ प्रस्तु-
त में जब कहीं फुरै अप्रस्तुत की ज्ञान॥ समासोक्ति भूषन क-
हैं ताको कवि कुल कान॥ २४७॥ उदा०॥ सजनी रजनी
पाइ शशि विहरत रस भरपूर॥ ... गत प्राचीमु-
दित ... के सूर॥ २४८॥ परिकरलक्षण॥ जहाँ वि-
शेषन दीजिये सह आशय अभिराम॥ गिरिधरदास ब-
खानिये भूषन करि परिनाम॥ २४९॥ उदा०॥ चक्रपा-
नि हरि को विरह असुर जान भी दूर॥ ... घ-
नश्याम तुम ताप हरन मुद पूर॥ २५०॥ परिकरांकुरलक्ष-
न॥ जहाँ विशेष्यहि दीजिये अभिप्राय के संग॥ परिक-
रांकुर तौन है भूषन कवित अभंग॥ २५१॥ उदाहरण०
मोरस नाते आज बहु पियतें कहैं कुबोल॥ पावत
हीं पुजवावतो सूर प्रताप अतोल॥ २५२॥ श्लेषलक्षण०
बहुत अर्थयुत श्लेष है भूषन कहहिं प्रवीन॥ वर्ण्य अ-
वर्ण्य दुहूंनके आश्रित भेद सुतीन॥ २५३॥ प्रकृतानेक

विस छोमो दाहरण॥ अहि सवार मारि आन जित नरक द। लक जित पाक॥ विजय मित्र बल बंधु सुत मत्तु हतत कुच री बाक॥२४४॥ अप्रहृत्ता नेक विषय श्लेषोदाहरण॥ निय तो से सी चंचला जीवन सुखद समच्छ॥ बसति हृदय घ न श्याम के वर सारंग सु अच्छ॥२४५॥ प्रहृत्ता प्रकृता ने क विषय श्लेषो दाहरण॥ रति वल्लभ कर कुसुम वर रंग श्याम घन चारु॥ विस मैं सर पदु मैं गहे जल चर केतु उ दारु॥२४६॥ अप्रस्तुत प्रशंशा लक्षण॥ अप्र स्तुत बरनन विषै प्रस्तुत वरन्यो जाय॥ अप्रस्तुत पर संसतें हि कहहिं कबिन के राय॥२४७॥ उदाहरण॥ धन्य शेश सिर जगत हित धारत भुवि को भार॥ बुरो बाघ अपराध बिनु मृग को करत अहार॥२४८॥ प्रस्तुतांकुर लक्षण॥ द्योतन प्रस्तुत को जबै प्रस्तुत ही सों होइ॥ प्रस्तुत अंकुर आभरन ताहि क हहिं सब कोइ॥२४९॥ उदाहरण॥ तूं गज तजि मंदा कि नी सरित छुद्र अन्हात॥ कहा अली तजि मालती साल मली ढिग जात॥२५०॥ पर्य्यायोक्ति लक्षण॥ कहिय बात रचनान करि पर्या योक्ति बखानि॥ मिसु करि करिज साधि ये यही अलंकृत जानि॥२५१॥ प्रथम उदाहरण॥ जाको मन सब जगत मनि जग प्रमाण इक स्वांस॥ तिनके सबके चरण कों बंदत गिरि धर दास॥२५२॥ द्वितीय पर्य्यायोक्ति उ दाहरण॥ सुंदर श्यामा श्याम दोउ घरि कर होइ तु आज॥ तबलों आवति होइ मैं वा वन करि कछु काज॥२५३॥ व्या ज स्तुति ल॰॥ व्याज स्तुति निंदा मिसि सों स्तुति जहं बरनी जाइ

निंदा मिस स्तुति मिसौ स्तुति निंदहिं कवि गाय ॥२५४॥ निंदा व्याज स्तुति कौ उदाहरण ॥ भले भये घन श्याम जू तुम सौं अहै न और ॥ सब तज सबकौं आपने लीनौं तुम हूं ठौर ॥२५५॥ अस्तुति व्याज निंदा कौ उदाहरण ॥ सुंदर गुन अविवेक किनी कौन लियो यह दान ॥ निज बंधु को मान करावत भंग ॥२५६॥ व्याज स्तुति कौ उदाहरण ॥ एकबार नामहिं लिये करत हरि अघनाश ॥ धन्य संत जागर करत ऐसे ... ॥२५७॥ व्याज निंदा लक्षण ॥ जहाँ निंदा कै व्याज करि निंदा ही ठहराय ॥ ताहि व्याज निंदा कहैं ... कविराय ॥२५८॥ उदाहरण ॥ नरक द्वार नारी ... सदा लय लीन ॥ नरकपात महँ तोहिं धिक ... बुद्धि विहीन ॥२५९॥ आक्षेप लक्षण ॥ तीन भांति आक्षेप हैं कवि बरनहिं सविवेक ॥ कही बात कौं समुझि कछु करै निषेध सुएक ॥२६०॥ जहां निषेधाभास तहं है आक्षेप द्वितीय ॥ छिप्यो निषेध रहै जहां आज्ञा प्रगट तृतीय ॥२६१॥ प्रथमाक्षेप उदाहरण ॥ हरि दीजै बैकुंठ कै वृंदावन कौ वास ॥ सर्व भौम भूपति करौ अथवा अपनो दास ॥२६२॥ द्वितीय आक्षेप उदाहरण ॥ मैं कवि हौं नहिं भूमिपति तुम से तुम जग माहिं ॥ नहिं मैं दूती राधिके तुम बिन ही बिलखाहिं ॥२६३॥ तृतीयाक्षेप उदाहरण ॥ जाहु जाहु परदेश पिय मोहिं न कछु दुख भीर ॥ प्रान ... जाइ मो रहिहै इतै शरीर ॥२६४॥ विरोधाभास लक्षण ॥

भासै जहां बिरोध सो अहै बिरोधाभास ॥ भूषन हूं मि वरन न करहिं कवि जन गिरिधर दास ॥ २६५ ॥ उदाहरण० ॥ मोहन है तोहि मोह अति याकी उर के माहिं ॥ चारु बसु नृप दृग दोऊ पंकज से दरसाहिं ॥ २६६ ॥ विभावना लक्षण ॥ षट बिधि होति बिभावना बिन कारन के काज ॥ द्वितीय अपूरन हेतु तें पूरन कारज साज ॥ २६७ ॥ प्रति बंधक के अछतहूं कारज होइ तृतीय ॥ काज अकारन तें जहां सो चतुर्थ कथनीय ॥ २६८ ॥ उपजै हेतु विरुद्ध तें कारज पंचम सोइ ॥ कारन जनमें काजतें छठी बिभावन होइ ॥ २६९ ॥ प्रथम वि० उ० ॥ बिन मादक हरि नैन तुव घूमत अरुन लखाय ॥ बिन मेहंदी करतल अरुन बिन जावक के पाय ॥ २७० ॥ द्वितीय वि० उदाहरण० ॥ एक चक्र रथ बैठि रवि फिरत करोरन कोस ॥ करत अर्ध कर पग अरुन सारथि पनो अदोस ॥ २७१ ॥ तृतीय वि० उदाहरण० ॥ श्याम हृदय सुमिरत तऊ अति उज्वल मन होइ ॥ जीव हरत पर नृप तऊ सबै लहत अघ खोइ ॥ २७२ ॥ चतुर्थ वि० उदाहरण ॥ विद्रुम मैं तें हैं कढी कुंदकली समुदाय ॥ दिवस प्रकासित दैरवि पतन लखत सहित द्विजराय ॥ २७३ ॥ पंचम वि० उदाहरण० ॥ सीतल मंद सुगंध जुत ताप चढ़ावत पौन ॥ फूल्यो लखि उड़पति उदय अंबुज आनंद भौन ॥ २७४ ॥ षष्ठी वि० उदाहरण० ॥ पंकज तें निकली नदी सोहत ॥ गिरिधरदास ॥ कल्प वृक्ष तें रतन निधि निकस्यो सहित हुलास ॥ २७५ ॥ विशेषोक्ति ल० ॥ पुष्कल कारन सैं

कारज उपजै नाहिं ॥ विशेषोक्ति सो हि कहत हैं कवि ग-
न जग के माहिं ॥ १७६ ॥ उदाहरण० ॥ हृदय श्याम घन
जनित रस करन सबहि छन वास ॥ न ऊतहों को ताप र-
नहिं नेकहु होत हिरास ॥ १७७ ॥ असंभव लक्षण० ॥
कार्य सिद्ध की वर्णिये असंभाव्यता यत्र ॥ अलंकार
उर आनिये सुकवि असंभव तत्र ॥ १७८ ॥ लंक जारि
है मारि है को दिन मर दल भौन ॥ इक नर वरव-
न नासिहै ह्वो जानतो कौन ॥ १७९ ॥ असंगति
लक्षण० ॥ काज हेतु दुनदुहुन की असंभाव्यताय-
त्र ॥ अति विरुद्ध जानौ पै प्रथम असंगति तत्र ॥ १८०
उदाहरण० ॥ सिंधु जनित गरहर पियो मरे असुर समु-
दाय ॥ नैन बान नैनन लग्यो भयो करेजे घाय ॥ १८१ ॥
द्वितीय असंगति लक्षण० ॥ और ठौर के काज कौं औ-
र ठौर करि देइ ॥ द्वितिय असंगति समुझिये सुकवि स-
मूह निमेइ ॥ १८२ ॥ उदाहरण० ॥ शीश महावर औठ
पैं अंजन रंजन रूप ॥ आजु भोर आये सहो चारु बने
ब्रजभूप ॥ १८३ ॥ तृतीय असंगति ल० ॥ और कार्य आ-
रंभिये और कीजिये यत्र ॥ तीन असंगति मैं अहै त्र-
य असंगति तत्र ॥ १८४ ॥ उदाहरण० ॥ दुख गोपन कौं
करन हित चले गोप सिर मोर ॥ दुख गोपन कौं ना कि-
यो अधिकी कीनो और ॥ १८५ ॥ विषम लक्षण० ॥
तीनि भाँति वरनन करहिं कवि विषम अलंकार ॥ अ-
न मिलते को संगति लजानहु प्रथम प्रकार ॥ १८६ ॥

कारन श्रौरैं रंग को कारज श्रौरै रंग ॥ तृतीय इष्ट उद्यम किये नहें अनिष्टहि संग ॥ २८७ ॥ प्रथम विषम उदाहरण ॥ कहँ कोमल दशरथ सुवन कहँ कठोर धनु ईश ॥ कहँ समुद्र योजन अमित अति अगाध कहँ कीश ॥ २८८ ॥ द्वितीय विषम उदाहरण ॥ दीरव सिखा रंग पीततें धूम करन अति श्याम ॥ सेत सुयश छायो जगत मगर आपतें श्याम ॥ २८९ ॥ तृतीय विषम उदाहरण ॥ वनवारी हित बन गई मिलन गोप मयंक ॥ लौटें नारि घर की सबै भूठ हि देहिं कलंक ॥ २९० ॥ समलक्षण ॥ बरनत तीन प्रकार हैं सुकवि समालंकार ॥ यथा योग को संग इह प्रथम जानियै चारु ॥ २९१ ॥ कारन कारज दुहुन को एकहि अंग द्वितीय ॥ जाहित उद्यम करिय फल पाइयतो नत्तीय ॥ २९२ ॥ प्रथम सम उदाहरण ॥ उचित सीस पैं सोहतो कस्तूरी को बिंदु ॥ सरस सरद राका विषे उदित सुलै सो इंदु ॥ २९३ ॥ द्वितीय सम उदाहरण ॥ बचन चंद्र की चंद्रिका हरत ताप मुददानि ॥ ब्रजरानी घन श्याम सों सुत जायो छवि खानि ॥ २९४ ॥ तृतीय सम उदा० ॥ हरि ढूंढन ब्रज मैं गई पाये गिरिधर लाल ॥ चाह किये सुख हेतु सो देति सुकीया बाल ॥ २९५ ॥ विचित्र ल० ॥ करै यतन विपरीत जहँ फल पावन के हेत ॥ सो विचित्र भूषन सुहै वरनत बुद्धि निकेत ॥ २९६ ॥ उदाहरण ॥ सुख इच्छा सों सुख तजें जोगी हर्ष समेत ॥ धन लीबे कारन धानि धनी धनहिं हैं देत ॥ २९७ ॥ अधिक लक्षण

जहां पृथुल आधार तें अधिक अधेय सु होय ॥ पृथुल अधार अधेयतें अधिक अधिक ए दोय ॥ १९८ ॥ प्रथम अधिक उदाहरण० ॥ उपमा उदधि अपार में नहिं समात सुखचंद ॥ ज्ञान कथा बिस्तार में तासु नंद नंद ॥ १९९ ॥ द्वितीय अधिक उदाहरण० ॥ किते रु घन श्याम को रोम रोम ब्रह्मांड ॥ कितो जसोदा गोद जिन खेलत ब्रह्म अखंड ॥ २०० ॥ अल्प लक्षण० ॥ होय अल्प आधेय तें सो अल्प आधार ॥ गिरिधर दास बखानिये तिहि अल्पा लंकार ॥ उदाहरण० ॥ २०१ ॥ परमानहु तें परम लघु मन जग बिख्यात ॥ सोऊ तेरे हृदय महं लोभी नाहि समात ॥ २०२ ॥ अन्योन्य लक्षण० ॥ जहं उपकार परस्पर हि बरनत करी निरधार ॥ ताको कवि जन कहत हैं अन्योन्यालंकार ॥ २०३ ॥ उदाहरण० ॥ नृप तें सेना सोहती सेना तें नर नात ॥ दूलहतें से बरात सों दूलह सों बरियात २०४ ॥ बिशेष लक्षण० ॥ तीन प्रकार बिशेष है कवि बरनहिं गुनि येय ॥ प्रथम ख्यात आधार बिन जहं बरनिय आधेय ॥ २०५ ॥ एक बस्तु कहं बरनिए ठौर अनेक हि दोय ॥ जहां अल्प उद्यम किये बहुल सिद्धि तितीय ॥ २०६ ॥ प्रथम बिशेष उदा० ॥ गए तमी हूं तम रह्यो कोठरी बीच समाइ ॥ कमल बिना कमला लया वह बैठी दासा प ॥ २०७ ॥ द्वितीय बिशेष उदाहरण० ॥ सोवत जागत दिशि बिदिश देखि परैं घन श्याम ॥ कंस हृदय आदहु पहर कुसम करैं बिश्राम ॥ २०८ ॥ तृतीय बिशेष उदाहरण०

गीता के पद नहिं पढे चारि वेद सह तत्व ॥ वृंदावन ल-
खन हित्यो गऊ लोक सुभ सत्व ॥२०९॥ व्याघात ल०
जौन वस्तु तें होइ जो तासु विरोधी जौन ॥ तिही वस्तु सों
होइ जब है व्याघात सुतौन ॥२१०॥ उदाहरण० ॥ जासु
मिरन सों भक्त जन पावहिं पद निर्बान ॥ ताही सों स नि-
जगत जन भ्रमत फिरहिं अज्ञान ॥२११॥ द्वितीय व्याघा-
त लक्षण ॥ काज विरोधी काजही जहां समर्थो जात
काज हेतुहीं सों जहां सो दूजो व्याघात ॥२१२॥ उदा० ॥
कर्म करहिं भव बंध डर योगी श्रुति अनुसार ॥ परमहंस कर-
महिं तजहिं तिहि डर करि निरधार ॥२१३॥ कारन माला
लक्षण० ॥ कार्य हेतु जहं पूर्व को पर को उलटि जो होइ ॥
ऐसी जहां परंपरा कारन माला सोइ ॥२१४॥ उदाहरण०
दल तें बल बल तें विजय तातें राज हुलास ॥ कृत तें सुत
सुत तें सुजस जस तें दिवि महं वास ॥२१५॥ उलटि यथा
धन गुन तें गुन पढन तें पढिबो गुरु तें होइ ॥ गुरु सुकर्म
तें सुभ करम कीये उत्तम जोइ ॥२१६॥ एकावली ल०
क्षण० ॥ ग्रहन मुक्ति की रीति सों जहां अर्थ की ओलि
अलंकार एकावली ताहि कहहिं कबि मोलि ॥२१७॥
उदाहरण० ॥ पढिबे गुनिबे लौं गुनन अभ्यासन लौं
जानि ॥ अभ्यासहु निज ज्ञान लौं ज्ञान भक्ति लौं मानि
२१८॥ माला दीपक लक्षण० ॥ मिलि दीपक एकावली
माला दीपक सोइ ॥ इमि बरनहिं आभरन यह कोविद को-
विद सब कोइ ॥२१९॥ उदाहरण० ॥ जग जस तें जस

धरम तें धरम करमनें चारु॥ करम वेद बचनानि तें भयो भूमि भरतारु॥२२०॥ सार लक्षण०॥ सरस एक नें एक जहँ अलंकार तहँ सार॥ कहुँ स्तुति कहुँ निंदमय कहुँ उभय ब्यवहार॥२२१॥ स्तुति मय उदाहरण०॥ पूज्य नरन तें सुर स्रुति तिननें हरि भगवान॥ पूज्य हरिहु तें हरि भगत जाउर उनको ध्यान॥२२२॥ निंदमय उदाहरण॥ सब तें लघु असमस कतें रजकन पुनि परमानु॥ परमानहुं तें गुनिरहित जानत जिनहि जहानु॥२२३॥ उभय मय उदाहरण०॥ बली त्रिदश पुनि दसबदन तातें बालि स गर्व। बली बालि तें लोभ है हर्यो अनुज धन सर्व॥ २२४॥ यथा संख्य लक्षण०॥ क्रम तें उक्तपदार्थ को क्रमतें अन्वय यत्र॥ कवि भूषण भूषण कहें यथा संख्य वर नत्र॥२२५॥ उदाहरण॥ सुरकों अरिकों मित्र कों भृत्य रंक कों भूप॥ पूजहु मारहु आदरहु रक्षहु देहु अनूप॥ २२६॥ पर्य्याय लक्षण०॥ क्रमहीं सों जहँ एक कों होय अनेक अधार। कै अनेक को एकही है पर्य्याय प्रकार॥२२७ प्रथम पर्य्याय उदाहरण॥ हुती देह मैं लरिकई बहुरि तरुणाई जोर॥ निरुधाई आई अबौ भजतन नंद किशोर॥ २२८॥ द्वितीय पर्य्याय उदाहरण०॥ मेरोई मन मोहित जिहि तिन किया निवास॥ ताहू कों तजि कों बसो अजि हरि तिन के पास॥२२९॥ परिवृत्ति ल०॥ थोरेई दीने जहां बहुत पदारथ लेत॥ अलंकार परिवृत्ति तेहि बरनहि बुद्धि निकेत॥२३०॥ उदाहरण०॥ विंध्याचल मैं गंग।

जल अर्क सुमन लै सेत ॥ दैकै देव कपर्दि कहं जात सुव-
रलेत ॥ २३१ ॥ परिसंख्या लक्षण ॥ जहां सकल ही वस्तु को
है निषेध इक ठाम ॥ दूजे थल थापन तहां परिसंख्या य-
ह नाम ॥ २३२ ॥ उदाहरण ॥ बाल मान नेह नहीं है वृद्ध
पितु धाम ॥ नहिं ब्रज में घन श्याम हैं नभ में लसत स-
लाम ॥ २३३ ॥ बिकल्प लक्षण ॥ एक विरोधी एक को
तिन में कहिवे अर्थ ॥ कै यह कै वह होइ गो सो विक-
ल्प अनवद्य ॥ २३४ ॥ उदाहरण ॥ चलजू अघ नवाय
हैं हलकै तेरो शीश ॥ यम पुर कै पुराणि हैं तोहि अव-
हिं अवनीश ॥ २३५ ॥ समुच्चय लक्षण ॥ एक साथ
ही भाव बहु कछु कारण ते यत्र ॥ अलंकार उर आनि
यै सुकवि समुच्चय तत्र ॥ २३६ ॥ उदाहरण ॥ फेरति
हग हेरति हरिहि टेरति नाम सुनाय ॥ फिर तिथि रति
उझकति झुकति भकति झरोखे आय ॥ २३७ ॥ द्विति-
य समुच्चय ल० ॥ एक एक ही हेतु तें जो कारज सिद्धि हो-
य ॥ तेहि काजहि सब मिलि करैं द्वितीय समुच्चय सोय
॥ ३२८ ॥ गंगा गीता गुरु गऊ गोकुल औ गिरिराज ॥ ए-
सब मिलि कै देत हैं सत गति दिव्य दराज ॥ २३९ ॥ कार-
क दीपक लक्षण ॥ क्रम गति क्रिया अनेक को कर्ता ए-
क हि होइ ॥ कविता उपकारक अहै कारक दीपक सोइ
॥ २४० ॥ उदाहरण ॥ आवत पुनि अन मिख लखत ।
लखि हियरे हरषात ॥ वेणु बजावत नाम लै तो हित गो-
कुल नात ॥ २४१ ॥ समाधि लक्षण ॥ अपर हेतु तें कार्य

जहँ सुगम भाग्य बस होइ ॥ सो समाधि गत्यादि बल-
त कहि सब कोइ ॥ २४३ ॥ उदाहरण ॥ चलत कंत कहँ का-
मिनी रोकन चहत प्रवीन ॥ भा हजार गोहार मग आगे
घरनाल हीन ॥ २४३ ॥ प्रत्यनीक लक्षण ॥ लखि अजीत नि-
ज शत्रु कहँ ताप क्षी कहँ जन ॥ कौ पराक्रम सत्य निज
प्रत्यनीक है तत्र ॥ २४४ ॥ उदाहरण ॥ हरि मार त्रिपुरारि
सों महा कोप विलारि ॥ तदनु कारि मुनि वन को उर
बेधत सर मारि ॥ २४५ ॥ काव्यार्थापत्ति लक्षण ॥ कौ काज
गुरु तिहि कहा लघु मैं बाल गनि ॥ होइ उक्ति ऐसी जहां
है काव्यार्थापत्ति २४६ ॥ उदाहरण ॥ शोक भरी मंदोदरी
बोली करि सुविचार ॥ बल साली बाली बध्यो तोहि मार-
त को बार ॥ २४७ ॥ काव्यलिंग लक्षण ॥ उक्त अर्थ जो पुष्ट
नहिं बिना समर्थन होइ ॥ ताहि समर्थिय युक्ति सों काव्य
लिंग है सोइ ॥ २४८ ॥ उदाहरण ॥ अब भव पारावार के
पार जात नहिं बार ॥ हैं सहाय रघुराज जू नौका केवनहा-
र ॥ २४९ ॥ अर्थान्तरन्यास लक्षण ॥ जहां विशेष सामा-
न्य तें होय समर्थित खास ॥ कै सामान्य विशेष तें सो अ-
र्थान्तर न्यास ॥ २५० ॥ प्र० उ० ॥ हरि प्रताप गोकुल न को
का नहिं करहिं महान ॥ हरिन कंस पुरा बण बध्यो धनस
ख कौन समान ॥ २५१ ॥ द्वितीय उदाहरण ॥ बर तांबूल
प्रसंग तें यस जात नप हाय ॥ तैसेइ रतन प्रसंग सें बसन
खंडता साथ ॥ २५२ ॥ विकस्वर लक्षण ॥ धरि विशेष सा-
मान्य पुनि पुनि विशेष वसि यत्र ॥ इक इक कौं ह्व ।

कमहिं तें काहिं बिकस्वर तत्र ॥२५३॥ विकस्वर भेद० ॥
भेद बिकस्वर में जुगल बरनत सुकबि दुहूँन ॥ जो बिशेष
अंतिम सुतो कहुं उपमान कहूँन ॥२५४॥ प्रथम विक-
स्वर उदाहरण ॥ तुम दैहो मत देत हैं जिमि सुरतरु मन
मानु ॥ सुनि तुम अमृत उर तम हर्‌यो सुजन रीति जिमि भा-
नु ॥२५५॥ द्वितीय वि० उ० ॥ दुर्योधन नाहिं मानिहैं ख-
लकी औषधि हैन ॥ नींबहि गुड़ सों सींचिये होति मधु-
रता यैन ॥२५६॥ प्रौढोक्ति लक्षण ॥ कारज गत उतकर्ष
को जो न हेतु तेहि हेतु ॥ कारबरनिय प्रौढ़ोक्ति कबि मा-
न तासु कहि देतु ॥२५७॥ उदाहरण ॥ जमुना नीर नहा-
त नित मन मोहन तन स्याम ॥ तो ओज परसे कढ़िन
ताको उर है बाम ॥२५८॥ संभावना लक्षण ॥ जो यह
होइ तौ होइ यह ऐसी उक्ति सुयत्र ॥ अलंकार संभावन
बरनोहें कवि जन तत्र ॥२५९॥ उदाहरण ॥ जौ ब्रजराज
होते सुनौ लगते लालन पाय ॥ जौ खग होते तौ तुरत
जाते जहं ब्रजराय ॥२६०॥ मिथ्याध्यवसित लक्षण ॥
कथित झुठाई ताहि अति दृढ़   करिबे कों यत्र ॥ अप-
र झुठाई कल्पिये मिथ्याध्यवसित तत्र ॥२६१॥
उदाहरण ॥ बहति वारि पर घर बिरचि शुचि शीतल
करि आग ॥ हे तरुणी बस तरुण तन करहु विषय रस
त्याग ॥२६२॥ ललित लक्षण ॥ प्रस्तुत गत वृत्तांत जो
बरनौं चतक्षि तौन ॥ अप्रस्तुत प्रति बिंब तत कहिय ल-
लित मति भौन ॥२६३॥ उदाहरण ॥ अब पछिताये

होत का चुग्यौ चिरैयन खेतु॥ चाहति उतरन पार तूं विना
नाव बिन सेतु॥२६४॥प्रहर्षन लक्षण॥तीन प्रहर्षन मैं
ऽहै प्रथम प्रहर्षन सोइ॥जतन बिनाहीं लाभ जहं वां
छित फल को होइ॥२६५॥उदाहरण॥जाको मिलि-
बो चहत है महत मनोहर श्याम॥सो चलि आई आपु-
ही पूछत तुम्हरो नाम॥२६६॥द्वितीय प्रहर्षण लक्षण॥
वांछित फलतें अधिक फल विनहीं श्रम जहं होइ॥
कविरस वर्षण कहत हैं द्वितीय प्रहर्षण सोइ॥२६७॥
उदाहरण॥चह्यो सुदामा अल्प धन दियो भूरि भग-
वान॥तिय हिय पिय दरशन चह्यो आय दियो रतिदा-
न॥२६८॥तृतीय प्रहर्षण लक्षण॥तृतीय प्रहर्षन ल-
हैं जहां फल साधक जु उपाय॥ताही को साधन करत
फल आपुहि मिलि जाय॥२६९॥उदाहरण॥पियपा-
ती सुधि लेन कों निकरी नारि बजार॥उततें आवति
मिलि गये गिरिधर लाल उदार॥२६९॥विषादन ल०
जो विरुद्ध चित चाहतें सोई कारज होइ॥ताहि विषा-
दन कहत हैं अलंकार सब कोइ॥२७०॥उदाहरण॥
हरि सों रति इच्छा करी अतिहि चाह सों बाल॥सुन्यो
जात मथुरा नगर लै अक्रूर गोपाल॥२७१॥उल्लास ल०
जहं इकके गुन दोस तें होइ और को तौन॥उल्लासा-
लंकार तेहि बरनहिं कवि मति भौन॥२७२॥कहुं गुन-
तें गुन दोस तें दोस गुनहुं ते दोस॥दोसहुं तें गुन होत
इमि बरनत कवि मति कोस॥२७३॥गुनतें गुन यथा॥

तीरथ चाहें परसि मोहि कराहिं सुपावन संत ॥ या सुच चहहिं पढ़ि सुफल मोहि करैं विद्बुधवंत ॥ २७४ ॥ दोषतें दोष यथा ॥ या राजा के राज्य में भूलि जाय जनि सोय ॥ राज भृत्य धन चारिहैं तब काकरिहै रोय ॥ २७५ ॥ गुनतें दोष यथा ॥ सो घर को सु अभाग जहं यज्ञ दान नहिं होइ ॥ सो विद्या किहि काम जेहि शिष्य हुलहैं न कोइ ॥ २७६ दोषतें गुन यथा ॥ ससुभ्रात बलमास्यो चरण हरन कियो तुवमान । लाभ दुतोई गुनहु जो बच्यो विभीषण मान ॥ २७७ ॥ अवज्ञा लक्षण ॥ गुनतें गुन नहिं होय अरु नहीं दोषतें दोस ॥ कहहिं अवज्ञा दोय विधि दूमि कवि कविता कोस ॥ २७८ ॥ प्रथम अवज्ञा उदा० ॥ सत कविता हूं के सुने नहिं हुलसै मद चित्त ॥ ऊसर उपजे अन्न नहिं बरसत हूं जलनित्त ॥ २७९ ॥ द्वितीय अवज्ञा उदाहरण ॥ शिव तुम हाला हल पियो कहा अमृत की हानि ॥ राखि समाये अंग नहिं चंदन लघुता मानि ॥ २८० ॥ अनुज्ञा लक्षण ॥ जहं अभिलाषा दोस की नाही मैं गुन पाय ॥ तहां अनुज्ञा आभरन कहहिं सकल कविराय ॥ २८१ ॥ उदाहरण ॥ हे विधि मोहि कब करहुगे नरतनतें ब्रज धूरि ॥ गोचारत गोपाल तन रहौं बात बस पूरि ॥ २८२ ॥ लेश लक्षण ॥ दोसहि गुन करि बरनिये गुनहि दोस करि यत्र ॥ कवि कुलेश बरनन करहिं लेश अलंकृत तत्र ॥ २८३ ॥ उदाहरण ॥ वरु अरसिक पसु हो भले बधिक कहि दे खि पराहिं ॥ राग रसिक मृग मोह

बसवरबस मोरे जाहिं ॥२८४॥ मुद्रा लक्षण०॥ प्रस्तुत के
बरनन विषं करै औरै को नाम ॥ पैन विदित सह पाठ के
सो मुद्रा गुन धाम ॥२८५॥ उदाहरण ॥ परमभाम अतरु
दर्शित मत्त मेय पद होय ॥ हरि अवतार प्रमाण पद दो-
हाई लव होइ ॥२८६॥ रत्नावली लक्षण०॥ जासु विदि-
त सह पाठ है करै ताहि को नाम ॥ प्रस्तुत के बरनन वि-
षै रत्नावलि लिहि ठाय ॥२८७॥ उदाहरण०॥ वास करत
आराम मैं भरत हितन आनंद ॥ देत लक्ष मन को गु-
निन शत्रु दमन नंद नंद ॥२८८॥ तद्गुण लक्षण०॥ रूप
आदि गुन पुंज मैं जो निज गुन तजि तौन ॥ दूजे को गु-
न लेहिं तहं है तद्गुन गुन भौन ॥२८९॥ उदाहरण०॥ ति-
य हिय ही रासु कचुकी नील वरण दरसाय ॥ पिय हिय
की कंचन बसन परे परस परछाय ॥२९०॥ पूर्वरूप ल०॥
पूर्व रूप है निज गुन हित तजि पुनि निज गुन लेइ ॥ दुति-
य वस्तु नासेहु नहीं मिटै अवस्था सेइ ॥२९१॥ प्रथम उदा-
हरण ॥ उपल लाल माला लिये लाल नाम तुव बाल
॥ मानिका परसत असित पुनि करतल दुति परि लाल
॥२९२॥ द्वितिय उदा०॥ कहा भयो जो करन को मरन भ-
यो नरराय ॥ रही जगत में आपु की दीह दान विधि का-
य ॥२९३॥ अतद्गुण ल०॥ संगी को रूपादि गुण कातन अं-
गीकार ॥ ताहि अतद्गुण आभरन बरनत बुद्धि अगार
२९४॥ उदाहरण०॥ सदा श्याम हिय लिय बसति लियहि
य हरि विश्राम ॥ तऊ न गोरे होत हरि श्यामा होति न ।

स्याम ॥ २९५ ॥ अनुगुन लक्षण ॥ निज गुन सो सर सात जो तेसो
लहै सहाय ॥ तातें अरु अधिकाय सो अनुगुन नाम कहा-
य ॥ २९६ ॥ उदाहरण ॥ कुरकी को पुट दे किये निंब पत्र र-
स क्वाथ ॥ ताकटुता नहिं कहि सकें जे पटु पंडित नाथ ॥ २९७ ॥
मिलित लक्षण ॥ समता तें इक वस्तु में अपर वस्तु छपि-
जाय ॥ कछुन भेद जान्यो परै मीलित तहां लखाय ॥ २९८ ॥
उदाह० ॥ पान पीक अधरान में सखी लखी नाहिं जाय ॥ का-
जर की अँखियान में कजरारी न लखाय ॥ २९९ ॥ सामान्य-
ल० ॥ बहुत वस्तु सम होय जहं नहिं विशेष लखि जाय ॥ जा-
नि परै सब एक से तहं सामान्य कहाय ॥ ३०० ॥ उदा० ॥ खरी
दीपमाला विषे बाला अति अभिराम ॥ को तिय को दीपक ।
सिखा मनहिं विचारत स्याम ॥ ३०१ ॥ उन्मीलित ल० ॥ समता
तें इक में अपर वस्तु जाय छिपि जत्र ॥ तदपि भेद कछु लखि
परै उन्मीलित है तत्र ॥ ३०२ ॥ उदा० ॥ हरित माल के कुंज में नहिं
लखाहिं छबि खानि ॥ पीतांबर मोंसत हिय तिय पिय कौं पहिचा-
नि ॥ ३०३ ॥ विशेष ल० ॥ समता संयुत वस्तु में कछु विशेष दरसा-
य ॥ जातें जान्यो जाय वह तिहि विशेष ठहराय ॥ ३०४ ॥ उदा० ॥ संत
हंस बक सेत हैं कैसे परैं लखाय ॥ पय पानी आये भेरै भेद सकल
खुलि जाय ॥ ३०५ ॥ उत्तर ल० ॥ अभिप्राय संयुत जहां गूढ़ उत्तर दा-
न ॥ अलंकार उत्तर तहां बरनत बुद्धि निधान ॥ ३०६ ॥ उदा० ॥ ब-
सन कहां कैसे पथिक है सुनो मम धाम ॥ पोहो वा ग्राम में सब
विधि को आराम ॥ ३०७ ॥ चित्र ल० ॥ वही प्रश्न उत्तर कहैं क-
हैं कहि यतकी निरधार ॥ अरु इक उत्तर प्रश्न बहु सो द्वै चित्र लंकार ॥

३०८ एक प्रश्नोत्तर को उदाहरण॥ कोकिल सुंदर नादकर कामहिं बलसु विशाल॥ केकी बहुता बज विषें को-समंत महिपाल॥३०९॥ अनेक प्रश्नै कोत्तर॥ कौन चलै केदार मैं काको थल केदार॥ कोहै रंक ओषधी हर उत्तर गिरिधार॥३१०॥ सूक्ष्म लक्षण॥ पर आशय लखि के चेष्टा साभिप्राय॥ उत्तर रूप अनूप जहँ तहँ सूक्ष्म कविराय॥३११॥ उदाहरण॥ लखन लख्यो रघुनाथ दिशि निसिचर आहन काम॥ नजरि निपैं धरि तर्जनी खैंचि लई लखराम॥३१२॥ पिहित लक्षण॥ ॥ ॥ कोऊ पर हनाल लखि नाहिं प्रकोसै यत्र॥ चेष्टा साभिप्राय करी पिहिता लंकृति तत्र॥३१३॥ उदाहरण॥ आलस आये निरखि जावक लाग्यो भाल॥ आतुर चातुर ता भरी दई आरसी बाल॥३१४॥ व्याजोक्ति लक्षण॥ जहँ गोपन आकार को कै वात कहि अन्य॥ तहँ व्याजोक्ति बखानहीं जे कवि धरनी धन्य॥३१५॥ उदाहरण॥ आरज न मानी नेक हू बरजत हौ बहु बार॥ बावन बहुत गुलाब तरु कीनैं नैन लगार॥३१६॥ गूढोक्ति लक्षण॥ जहँ कोऊ काहू और सों औरहि देइ सुनाय॥ जातें लखहिं नानि कारज नैं तहँ गूढोक्ति कहाय॥३१७॥ उदाहरण॥ गूढोक्तिके दोय भाँति दरसाहीं॥ वहु श्लेष युत देखिये कहुं श्लेष युत नाहिं॥३१८॥ श्लेषयुक्त को उदाहरण॥ जाहु परोसी या समय यादिन आवति बाल॥ आए पाहन अग्र चित सुरति करौ गौपाल॥३१९॥ अश्लेष रहित को उदा॰

या छन संगन आयहैं और होति तर मांझ ॥ ताते जाय नहा-
यहैं सखी अकेली सांझ ॥ ३२० ॥ विहृतोक्ति लक्षण० ॥
गुप्त अर्थ जहं आपुही कवि सूचित करि देत ॥ अलंकार
विहृतोक्ति तेहि बरनत बुद्धि निकेत ॥ ३२१ ॥ लक्ष्य माहिं
विहृतोक्ति के गुप्त अर्थ विधि दोय ॥ शब्द शक्ति सों होय
कहुं अर्थ शक्ति सों होय ॥ ३२२ ॥ शब्द शक्ति को उदाहरण
जैं गोरस चाहत लियो तो आवहु मम धाम ॥ यों कहि ।
याजक सों हरि हिं किय सूचित रतिठाम ॥ ३२३ ॥ अर्थ श-
क्ति को उदाहरण० ॥ अंशो मन न अघात है सुनि भूठी रस
बात ॥ तूमि कहि भूठी बाल तब लाल लगाई गात ॥ ३२४
युक्ति लक्षण० ॥ निज मर्महिं गोपन करे कछु क्रिया करि
यत्र ॥ गिरिधरदास बखानिय युक्ति अलंकृत तत्र ॥ १
३२५ ॥ उदाहरण० ॥ हरि सों रति करि तिय उठी आइ गई
तित सास ॥ चीर फसाइ करील सों ठाढ़ी लेत उसांस ॥
३२६ ॥ लोकोक्ति लक्षण ॥ लोक प्रवाद बखानिये बच-
न बीच जेहि ठौर ॥ अलंकार लोकोक्ति तेहि बरनहिं बु-
ध सिरमौर ॥ ३२७ ॥ उदाहरण ॥ कहा न सावत शोक कों
सुन्दो ज्ञान बताय ॥ ऊधो आप सुनी कहूं प्यास ओस
तें जाय ॥ ३२८ ॥ छेकोक्ति लक्षण० ॥ अपर अर्थ व्यंजक
जहां सोइ लोकोक्ति लखाय ॥ बचन न कौ रचना न तें
नहं छेकोक्ति कहाय ॥ ३२९ ॥ उदाहरण ॥ दूती पद चू-
ती कहा कीनो नहि पति बंध ॥ दोनो बनि आयो भलो
सोनो और सुगंध ॥ ३३० ॥ वक्रोक्ति लक्षण ॥ सुनत ।

वाक्य रो पादिवस ह्वै अर्थ जहं और ॥ कहूं स्लेषहूं का
कुसौं वक्रउक्ति तिहि ठौर ॥ ३३१ ॥ स्लेष वक्रोक्ति उदाहर-
ण ॥ मान तजो गहि सुमति वर पुनि पुनि होति न देह ॥
मान तजो गी योग कों नहिं हम करत सनेह ॥ ३३२ ॥
काकु वक्रोक्ति यथा ॥ तोहि त्यागि श्यामहि सखी अ-
न्तिय नाहि सुहाय ॥ अरु तिय नाहि सोहाय सुनि बोली
नैन चढ़ाय ॥ ३३३ ॥ स्वभावोक्ति लक्षण ॥ शिशुत्वादि
जो जाति हैं तद्गत जौन सुभाय ॥ ताको बरनन कर-
त तहं स्वभावोक्ति कविराय ॥ ३३४ ॥ उदाहरण ॥ धूर
धूरे टे धरनि में धाल अरपरे पांय ॥ लाल लट परे आ-
खरनि आपल सरिल हरषाय ॥ ३३५ ॥ भाविक लक्षण
भूत भविष्य पदार्थ को जहां सकल कविराय ॥ बरन-
त करि प्रत्यक्ष तहं भाविक भाख्यो जाय ॥ ३३६ ॥ भूत
प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ बेणु बजावत मधुर सुर कोटिल जावत मे-
नु ॥ ऊधो आवत अजहुं हरि सांझ चरावत धेनु ॥
३३७ ॥ भविष्य प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ श्याम सिंह नृपट्ट-
द मैं श्याम सिंह सम विप्र ॥ मैं देखति कर पकरि मो-
हि जात सुरग धरि छिप्र ॥ ३३८ ॥ उदात्त लक्षण ॥ ॥
श्लाघनीय जो चरित सो अंग और को होइ ॥ अरु सम्प-
त्ति संपति बरनिबो है उदात्त विधि दोय ॥ ३३९ ॥ प्रथम
उदात्त उदाहरण ॥ मुनिजन आवहिं जासु पद दर-
सन पावहिं रंच ॥ ते कुब्जा के भवन में राजत बैठे-
मंच ॥ ३४० ॥ द्वितीय उदात्त उदाहरण ॥ तो घर मैं

डारहिं जनी घरी मनो नखुहारे। तिन लै भे नग नग घने
लखहु मेरु अनुहारि॥३५१॥ अत्युक्ति लक्षण॥ ज-
हँ उदारता सूरता विरहादिक की उक्ति अद्भुत मिथ्या
होय तहँ अलंकार अत्युक्ति॥३५२॥ उदारता यथा॥
भूपति तेरे दान सों याचक भयो सुमेर॥ भरकहिं देत
प्रदच्छिना सूरलहैं बहु फेर॥३५३॥ सूरता यथा॥ तो
प्रतापडर मान तजि शत्रु गये यमलोक॥ दुरहु नभ-
रै आतप इनकु हृदय हरै शोक॥३५४॥ विरह यथा॥
जाबन विरहिनि जालि है तजति स्वास शिखि ज्वाल।
तावन के सारवी गिरैं राखी ह्वै तत्काल॥३५५॥ निरु-
क्ति लक्षण॥ जहाँ योग वस नाम को कल्पित औरै
अर्थ॥ तहँ निरुक्ति भूषन कहैं कवि कुल तिलक स-
मर्थ॥३५६॥ उदाहरण॥ जौं परकीया त्यागि के च-
ले विदेश सचैन॥ तौ विषई तुम सांच हौं अबला।
मानहि लैन॥३५७॥ प्रतिषेध लक्षण॥ जहाँ प्रसि-
द्ध निषेध को अनुकीर्त्तन दरसाय॥ प्रतिषेधालंका-
र कहहिं तिहि अति मति कविराय॥३५८॥ उदाह०
नहि विराट को पाकघर जहँ करछी व्यवहार॥ यह
संगर जामें चलैं बरछी बारंबार॥३५९॥ विधि ल०॥
सिद्ध वस्तुही को जहाँ कोऊ करै विधान॥ विधि भूष-
न तहँ जानिये दुहि विधि कहहिं सुजान॥३६०॥
उदाहरण॥ क्रमसों पहुंचत अरक जब सक्रमकर-
क नगीच॥ जीवन मद शति होत नव जीवन मद-

जगबीच ॥ ३५१ ॥ हेतुलक्षण ॥ जहांकाज के सायही कारन वरन्यो होइ ॥ कैदोउन की एकताहोन हेतु विधि दोइ ॥ ३५२ ॥ प्रथम हेतु उदाहरण ॥ गरजि उठे घन मानिनी मान मिटावन काज ॥ धनुटंकारयो भूपनैश त्रु नमावन साज ॥ ३५३ ॥ द्वितीयहेतु उदाहरण० ॥ मोहि परम पद मुक्ति सवतो पद रज घनश्याम ॥ तीनि लोक को जीतिवो मोहि वसिवो व्रजग्राम ॥ ३५४ ॥ इत्यर्थालंकार समाप्तः ॥ अथ शब्दालंकार ॥ इमि अर्थालंकारमत वरनि वुद्धि अनुसार ॥ वरनत गिरिधरदास कवि अव शब्दालंकार ॥ ३५५ ॥ अनुप्रासलक्षण ॥ स्वर विन व्यंजन वरन की जहं समता दरसाइ ॥ स्वर संयुत हु कहंहि तेहि अनुप्रास कवि राइ ॥ ३५६ ॥ उदाहरण० ॥ मन मोहन सोहन भले लसत रसीले नैन ॥ दाढ़े गुन गाढ़े अहैं कहत छवीले नैन ॥ ३५७ ॥ अथ छेकानुप्रास लक्षण० ॥ समता बहु व्यंजनन की क्रम सों जहं इकबार ॥ तहं छेकानुप्रास है सुनिये सुकवि उदार ॥ ३५८ ॥ उदाहरण० ॥ शुभ सोभा सोहै सही बारी बर चल चाल ॥ सोना सीनो रस रसी वनी बनै वलि बाल ॥ ३५९ ॥ वृत्त्यनुप्रास लक्षण० ॥ समता बहु व्यंजनन की जहं विनु क्रम इकबार ॥ कै क्रमसों बहु बार तहं वृत्ति अलंकृति चारु ॥ ३६० ॥ एक बहु व्यंजन की जहां समता करति निवास ॥ एक बार बहु बार करि तहां वृत्त्यनुप्रास ॥ ३६१ ॥ एकवार बहु व्यंजन सम

ता यथा ॥ लसै शैल पर रूप धर नवघन हरि रस साथ ॥
लसै सुखमय चारुरुचि धरे राधिका हाथ ॥ ३६२ ॥
क्रम सों बहुवार व्यंजन समता यथा ॥ बैन बनै बनिता
सुखद वज्ञ विधु बुध बुधि ऐन ॥ नील नील नल ना-
रंग हरि कोकिल कल किल बैन ॥ ३६३ ॥ एक व्यंजन की
एकवार समता यथा ॥ ठाढ़े गाढ़े गुन बने सखि देखो
हम श्याम ॥ प्रीति मंन सोहैं महा निसि बसि श्यामा
धाम ॥ ३६४ ॥ एक व्यंजन की बहुवार समता यथा ॥
घेरि जोर करि घोर गुरु घुरे वारि भरे घोर ॥ फिरि घिरि
ढोरें वारि गिरिवर पर चारो ओर ॥ ३६५ ॥ श्रुत्यनुप्रास ल
क्षण ॥ तालु रदादि कथान तें व्यंजन को उच्चार ॥ ज-
हां साहृश अनुप्रास श्रुति वरनिय करि निरधार ३६६ ॥
व तुर जान की चारु छवि पंचन अच्छ प्रतच्छ ॥ फ-
कति चंद मुख लर्नहिं छुन जाइ झरोखे स्वच्छ ॥ ३६७
अंत्यानुप्रास लक्षण ॥ आदि स्वर संयुत जहां व्यं-
जन आवृत होइ ॥ सो अंत्यानुप्रास है कहि यतु कां-
तहि जोइ ॥ ३६८ ॥ उदाहरण ॥ नीरधीर पर पीर हर सं-
ग अहीर की भीर ॥ नीर तीर जहं कीर बहु लसै सीरधरि
वीर ॥ ३६९ ॥ लाटानुप्रास लक्षण ॥ शब्द अर्थ हू न
दुहुन की जहं पुनरुक्ति प्रकास ॥ तातपरज महं भेद
कछु तहं लाटानुप्रास ॥ ३७० ॥ उदाहरण ॥ राजिव
मुख राजिव नयन लखो नयन की कोर ॥ करि करु-
ना करुना करन हूल चीरो दुखचोर ॥ ३७१ ॥ यमक

लक्षण०॥स्वर व्यंजन गन की जहां आवृति सुकवि-
वरि बरनि॥यमक सोई है दोय विधि इक अखंड इक
खंड॥३७२॥सो अखंड सार्थक सबै शब्द जमक को
होय॥खंड शब्द सार्थक कोउ कोउ निरर्थक सोय॥
३७३॥अखंड यमक उदाहरण०॥भूप करन कुंडल
करन करन शत्रु मद नास॥आदि बरन वर बरन बित
उज्जल बरन प्रकास॥३७४॥खंड उदाहरण०॥जन
अधरन अंबुज धरन बर अधरन छबि खानि॥सर-
न सुखद अरि सरन जित रसरन बित मुद दानि॥१
३७५॥शब्दार्थ०॥आभरन दोऊ इहि बिधि भये
समास॥इनको पढ़ि गुनि गुन्निन कौं ह्वैहै अति सु-
खमास॥३७६॥कवि भारति भूषन परम भारति भू-
षन एहु॥भारति चरन सनेहु धरि सत कवि इहि प-
ढ़ि लेहु॥३७७॥विधि विधि गुनि शिव शिव हि गुनि
करत चरन रज आस॥बार बार तिनके चरन बंदत
गिरिधरदास॥३७८॥इति श्री नंद नंदन पदार बिंद
मलिंद धनाधीश श्री बाबू गिरिधरदास कवीश्व-
र विरचितं भारती भूषणमलंकार समाप्तम्॥

इति


SPS
891.2 G 87 B
6346

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
इन्द्रसभा	गोपीचंद भरतरी	लीलावती	संस्कृत उर्दू टीका
विक्रम विलास	कथा श्रीगंगाजी	पटवारियों की पुस्त-	सहित
बेताल पच्चीसी	अवधयात्रा	क ४ भाग	मनुस्मृति
सिंहासन बत्तीसी	भरतरी गीत	संस्कृत की पुस्तकें	विष्णु हारीत स्मृति
पद्मावती खण्ड	दानलीला नागली-	लघु कौमुदी	महिम्न स्तोत्र
शुक बहत्तरी	ला	सिद्धान्त चन्द्रिका	संस्कृत भाषाटीका
बकावली सुमन	दोहावली रत्नाव-	अमरकोष तीनों	सहित
चहार दरवेश	ली	कांड	अमरकोष तीनों कां-
क़िस्सा हातम ताई	गोकर्ण महात्म	पंचमहायज्ञ	ण्ड
अपूर्व कथा	श्री गोपाल सहस्र-	निर्णय सिन्धु	याज्ञवल्क्य स्मृति
क़िस्सा गुलसनोवर	नाम	संग्रह शिरोमणि	सन्ध्या पद्धति
सहस्र रजनी चरित्र	कथा सत्यनारायण	भगवद्गीता सटीक	व्रतार्क
राबिंसन क्रोसो का इ-	हनुमान बाहुक	विष्णु भागवत	भगवद्गीता टीका
तिहास	जनक पच्चीसी	भविष्योत्तर पुराण	हरिवंश
वैद्यक	ज्ञानन्दामृत वर्षि-	अपराध भंजन स्तोत्र	भगवद्गीता टीका-
निघण्ट माला	णी	दुर्गापाठ सटीक	ज्ञानन्दगिरि
अमर विनोद	वनयात्रा	दुर्गा स्तोत्र	गीत गोविन्द
वैद्यजीवन	कायस्थ वर्ण निर्-	कायस्थ कुल भास्कर	कथा सत्यनारायण
औषधि संग्रह कल्प-	णय	कायस्थ धर्म निर्-	परमार्थ सार
वल्ली	विहार विंद्रावन	णय	शार्ङ्गधर संहिता
अमृत सागर	समर विहार विंद्रावन	तथा स्तोत्र	पाराशरी
वैद्य मनोत्सव	कल्प भाष्य	मथुरा सभा	शीघ्रबोध
ज्योतिष	दस्ती	ज्योतिष	लघुजातक
जातक चन्द्रिका	अक्षरावली	मुहूर्त गणपति	षट्पंचाशिका
जातकालंकार	स्वयंबोध	मुहूर्त चक्र दीपिका	सामुद्रिक
दैवज्ञाभरण	ज्ञान चालीसी	मुहूर्त चिन्तामणि स-	सरिश्ते तालीम
ज्ञान स्वरोदय	दोहावली	मुहूर्त दीपिका	की पुस्तकें
रमलसार	बालाबोध	मुहूर्त मार्तण्ड स-	संस्कृत
इन्द्रजाल	विद्यार्थी की प्रथम	बृहज्जातक सटीक	ऋजुपाठ १ भाग
मुतफ़रक़ात	पुस्तक	जातकालंकार स-	तथा २ तथा ३ भाग
शनिश्चर की कथा	किताब जंत्री	जातकाभरण	धातुरूप
ज्ञान माला	गणित कामधेनु	होरा मकरन्द	कामरी

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वर्णमाला १ भाग	इंग्लिस्तान का इति-	हिदायत नामा मुद-	ऐक्ट ताल्लुक़ेदारान्
तथा २ भाग	हास	रिसान्	मक़रूज़ अवध २४
तथा कैथी फ़ारसी	भारतवर्षीय का इ-	पट्टा क़बूलत कैथी	सन् १८७० ई०
नागरी हरूफ़ मुक़र-	तिहास	तथा क़बूलियत	ऐक्ट चौपायों की मदा-
रात	हितोपत्रिका	रजिस्टर दाख़िल	ख़िलत बेजा का
अक्षरारम्भ	बालाभूषण	ख़ारिज तुलसाम-	१ सन् १८७१ ई०
वर्णप्रकाशिका	पद्यसंग्रह	दर्सा	मजमूआ ज़ाबिता
१ भाग व २ भाग	भाषाकाव्यसंग्रह	रजिस्टर हाज़िरी पा-	फ़ौजदारी १० सन्
सूरजपुर की कहानी	कवित्तरत्नाकर १ भा-	ठशाला	१८७२ ई०
धर्म्मसिंह का वृत्तान्त	तथा २ भाग	क़ानून	ऐक्ट माल गुज़ारी
शिक्षावली	मंगलकोश	नागरी	मग़रबी व शिमाली
शिशुबोध	अंकप्रकाश	ऐक्ट लगान मग़रबी	१९ सन् १८७३ ई०
पत्रहितैषिणी	गणितप्रकाश १ भा-	व शिमाली १० सन्	तरमीम मजमूआ
पत्रदीपिका	तथा २।३।४	१८५९ ई०	ज़ाबिता फ़ौजदारी
विद्याचक्र	गणितक्रिया	इंडियन पिनल कोड	११ सन् १८७४ ई०
विद्यांकुर	क्षेत्रचन्द्रिका १ भा-	मजमूआ ज़ाबिता	तक़ावी के क़ायदे
पदार्थज्ञानविटप	सकील मायरा	फ़ौजदारी ऐक्ट २५	सरक्यूलर गवर्न्मेंट
पदार्थविद्यासार	रेखागणित १ भा.	सन् १८६१ ई०	एड नम्बर ८० (अ-
भोजप्रबंधसार	तथा २ भाग	ऐक्ट स्टाम्प १० स-	लिफ़) सन् १८७७ ई०
राजनीति	बीजगणित १ भाग	न् १८६२ ई०	सवाल जवाब पुलि-
तथा	तथा २ भाग	ऐक्ट रजिस्टरी २०	स
भाषालघुव्याकरण	रामायण तुलसीकृ-	सन् १८६६ ई०	अवध रुहेलखंड
१ भाग तथा २ भा-	बालकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदा-	रेलवे का दस्तूरुल्
भाषातत्त्वदीपिका	अयोध्याकाण्ड	लत २६ सन् १८६७ ई०	अमल
भाषाचन्द्रोदय	अरण्यकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अ-	कैथी
भूगोलतत्त्व	किष्किन्धाकाण्ड	वध लगान १९ सन्	पटवारियों के क़ायदे
भूगोलदर्पण	सुन्दरकाण्ड	१८६८ ई० पटवा-	उर्दू कैथी महाजनी
इतिहासतिमिरना-	लंकाकाण्ड	री २६ सन् १८६८ ई०	ऐक्ट के लाइसेन्स
शक १ भाग व २ भा-	उत्तरकाण्ड	वग़ैरा	का ऐक्ट २ सन् १८७८
व ३ भाग	गुटका १ भाग	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-	ई० बंगाल मग़रबी व
अवधदेशीय भूगो-	तथा २ भाग ३ भाग	वेज़ात १८ सन्	शिमाली अवध इति
ल	पशुचिकित्सा	१८५९ ई०	

Austin

